आगमन पर बल दिया है।

उत्तर वैदिक कालीन अर्थव्यवस्था

1. गंगा यमुना दोआब एवं मध्य गंगा घाटी मे उर्वरभूमी के विशाल मैदानो की उपलब्धता से उत्तर वैदिक काल मे कृषि का विकास सम्भव हुआ तथा इस क्षेत्र मे प्रथम सहस्त्राब्दी ईसा पू० मे धीरे-धीरे स्थायित्व कायम होसका उत्तर वैदिक साहित्य मे ऐसे संकेत मिलते है कि पशुपालन का महत्व बना रहा इसी के साथ-साथ कृषि पर आधारित स्थायी जीवन प्रणाली का भी प्रारम्भ हो चुका था ~~साहित्यिक एवं पुरातात्वीक स्त्रोत यह बतलाते है कि लोग खाने मे चावल का प्रयोग करने लगे थे~~ तथा लोगो का प्रमुख धन्धा कृषि हो गया था और पशु पालन द्वितीयक धंधा। बनगया। अतः ग्रामिण संस्कृति का आरम्भ उत्तर वैदिक काल मे हुआ।

2. साहित्यिक एवं पुरातात्वीक स्त्रोत यह बतलाते है कि लोग खाने मे चावल का प्रयोग करने लगे थे चित्रीत धुसर मृदभाड तथा बांस संस्कृति के खुदायी किये गये सभी स्थानो से चावल के जले पड़े हुए दाने मिले है वैदिक साहित्य चावल के लिए ब्रीही, तन्दूला तथा सलि जैसे शब्दो का प्रयोग हुआ है उत्तर वैदिक काल मे लोग जौ तो उपजाते रहे लेकिन इस काल मे चावल और गेहू उनकी मुख्य फसल हो गयी। बाद मे चलकर गेहू पंजाब और पश्चिमी उत्तरप्रदेश मे मुख्य खाद्य हो गया। उस समय फसल चक्र का प्रयोग होने लगा था इस काल मे खेती की अधिक पैदावार और आर्थिक सम्पन्नता के लिए राजसुई यज्ञ मे दुध घि और पशुओं के

साथ-साथ अनाज भी चढ़ाया जाने लगा वैदिक अनुष्ठानों मे चावल के प्रयोग का विधान है गेहूँ के प्रयोग का यदा कदा ही चर्चा है।

नोट: (i) वैदिक लोगो को चावल से सर्वप्रथम परिचय दोआब के हुआ था चावल के अवशेष हस्तीनापुर एवं एटा जिला मे स्थित अतरंजीखेरा से प्राप्त हुआ है। जो 800BC का है।

(ii) अथर्ववेद के यज्ञ मे चढ़ाए जाने वाले बारह प्रकार के अनाजों का उल्लेख है

3. (i) इस काल के ब्राह्मणो को गाय बछड़े, साँड़, सोना, चावल, छप्परवाले घर तथा अच्छी पैदावार देने वाले खेतो को उपहार के रूप मे दिया जाने लगा उपहार मे दी जाने वाली ये वस्तुएं इस तथ्य की ओर इंगित करता है कि कृषि तथा कृषि पर आधारित स्थायी जीवन का महत्व बढ़ रहा था।

4. उत्तर वैदिक काल के साहित्य के वर्णन है कि लोग 6, 8, 12 तथा 24 तक बैल हल मे जोतते थे यह बात अतिशयोक्ति भी हो सकती है परन्तु इस सन्दर्भ मे यह स्पष्ट है कि खेती करने के लिए हल बैल का प्रयोग खूब होने लगा था जुताई लकड़ी के फाल वाले हल से होती थी यज्ञो मे पशु बलो के प्रचलन के कारण बैल पर्याप्त संख्या मे उपलब्ध नही रहे होंगे किन्तु इसके व्यापक प्रचलन मे संदेह नही है शतपथ ब्राह्मण मे हल सम्बन्धी अनुष्ठानो का लम्बा वर्णन आया है।

(नोट) (i) उत्तर वैदिक काल के प्रारम्भिक अवस्था मे राजा और राजकुमार भी शारीरिक श्रम करने मे हिचकते नही थे क्योंकि हमे ज्ञात है कि विदेह के राजा "जनक" हल चलाते थे कृष्ण के भाई बलराम को "हलधर" कहा जाता था क्योंकि हल उनका प्रमुख हथियार था

(ii) उत्तर वैदिक काल के अन्त तक आते-आते उच्च वर्णो के लिए लिए हल वर्जित हो गया

5 इस प्रकार हम देखते है कि उत्तर वैदिक काल मे मिश्रित कृषि व्यवस्था का प्रचलन था जिसमे खेती और पशुपालन दोनों का संयुक्त रूप से प्रयोग था क्योंकि कृषि प्रधान व्यवसाय था क्योंकि जिन जगहों की खुदाई से चावल प्राप्त हुए है वे स्थान दोआब के पूर्व क्षेत्र के अवस्थित है और ऊपर के सतह से ये पाये गये है मिश्रित कृषि व्यवस्था के कारण खेती पर आधारित स्थायी जीवन का उदय हुआ चूँकि मृदभांड सांस्कृतिक अवशेष दो से तीन मीटर की गहराई पर है जिससे यह पता चलता है कि लोग एक ही स्थान पर लम्बे समय तक रहते थे।

नोट धान की रोपाई विधि का प्रचलन इस काल मे नही था

6- भगवानपुरा तथा अतरंजीखेरा के खुदाई से स्पष्ट है कि ये दुम एवं लकड़ी से बनी गोल झोपड़ियो के स्थान

मिट्टी के प्रकोष्ठ से बने अधिक टिकाऊ घरों में लोग रहने लगे थे

7. जमीन की जुताई पारिवारिक श्रम तथा घरेलु नौकरों और दासों की मदद से की जाती थी इस युग मे, पहले भूमि का स्वामीत्व पुरे समुदाय या विश विश से ही वैश्य वर्ग निकला हुआ है। के पास होता था परन्तु धिरे-धिरे भूमि पर परिवार का स्वामित्व हुआ इसके परिवार का प्रमुख या गृह पती धनी हो गये

8. वैश्य समाज मे उत्पादक वर्ग था क्षत्रीय एवं ब्राह्मण उत्पादन के कार्यों मे सिधे हिस्सेदारी नही लेते थे और इनके जीवन यापन के लिए खाद्यान्न तथा सम्पती का उत्पादन वैश्य ही करते थे वैश्य जो भूमि कर या अन्य सामग्री क्षत्रीयों को देते थे, उसके बदले मे क्षत्रीय उनकी भूमि की रक्षा करते थे ब्राह्मणों का वैश्य जो दान देते थे उसके बदले मे ब्राह्मण उनके जिवन मे नैतिक उत्थान के लिए कार्य करते थे वैश्य इस घरेलु अर्थ व्यवस्था के मुख्य आधार थे जिवन निर्वाह करने वाले खाद्य पदार्थ क्षत्रीय एवं ब्राह्मणों के बीच क्रमशः भूमी कर और दान दक्षिणा मे बट जाते थे

नोट गायों को बेचने या खरीदने की कोई प्रथा नही थी

9. इस काल मे लोग चार प्रकार के मृदभांडो का प्रयोग करते थे

V.V.I. (I) काला और लाल मृदभांड
(II) काली पॉलिसदार मृदभांड
(III) चित्रीत धूसर मृदभांड
(IV) लाल मृदभांड

नोट (I) लाल मृदभांड लोगो के सबसे अधिक प्रचलीत था
(II) चित्रीत धूसर मृदभांड सबसे उत्कृष्ट श्रेणी का था जिसका प्रयोग उदयीमान उच्च वर्गों द्वारा किया जाता था
(III) जहां से चित्रीत धूसर मृदभांड मिले है वहां से कांच की चुड़ियां कांच की निधिया (बर्तन) पायी गयी है

10. उत्तर वैदिक काल मे बहुत प्रकार के कलाओं और शिल्पों का उदय हुआ, जैसे लोहार, रथकार, बढ़ई, ताम्रकार कुम्हार, कपड़ा बुनने वाला, इत्यादि

नोट: बुनाई केवल स्त्रीयां करती थी किन्तु यह काम बड़े पैमाने पर होता था

11. व्यापार →

(I) उत्तर वैदिक काल मे व्यापार का आभास मिलता है लेकिन उत्तर वैदिक के लोग आन्तरिक व्यापार ही किया करते थे मुद्रा का प्रचलन नही था।

उत्तर वैदिक काल के अंतिम अवस्था के उद्रा का प्रचलन हो पाया।

(ii) व्यापार वस्तु विनिमय प्रणाली के आधार पर होता था और गाय को हि मुख्य तौर पर विनिमय का आधार माना माना था

12 नगर ->

(i) उत्तर वैदिक ग्रंथों के नगर शब्द आया है लेकिन उत्तर वैदिक काल के अंतिम दौर में आकर ही हमें नगरों के आरम्भ का मन्द अभास मिलता है

(ii) हस्तिनापुर और कौशाम्बी वैदिक काल के आद्य नगरीय स्थल (Proto urban Site) कहे जा सकते हैं

नोट उत्तर वैदिक काल के समुद्र यात्रा की भी चर्चा है इस प्रकार वाणिज्य का भी संकेत मिलता है।

निष्कर्ष - कुल मिलाकर उत्तर वैदिक अर्थ व्यवस्था में लोगों के भौतिक जिवन में भारी उन्नती हुई। पशुचारी और यायावारी जीवन प्रणाली बहुत घट गये खेती जीविका का मुख्य आधार हो गया शिल्प और कला में भी प्रगती हुई। अब वैदिक लोग उत्तरी गंगा के मैदान में स्थिर रूप से बस गये मैदानों में बसने वाले किसान जिवन निर्वाह के लिये अधिक अनाज पैदा करके लगे अपनी उपज का कुछ हिस्सा अपने मुखियाओं, राजाओं पुरोहितों इत्यादि के निर्वाह के लिये बचा लेते थे।

उत्तर वैदिक कालीन राजनीतिक व्यवस्था